Roll No.....

Signature of Invigilator .....

Paper Code

BD-C7-401

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination May-June-2024

बी.ए. वैशेषिक दर्शन-2, द्वितीय सत्र

Time : 3 Hours **Max. Marks : 70**

नोटः यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

(खण्ड -क)

(दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

नोटः खण्ड 'क' में विकल्पसहित (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3 x15 =45)**

1. वैशेषिक दर्शनानुसार 'परिमाण' नामक गुण का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
2. उट्टष्टोत्पादक कर्मों का प्रमाणपूर्वक उल्लेख करें।
3. अभाव के स्वरूप एवं प्रभेदों का वर्णन करें।
4. वैशेषिकदर्शनोक्त संयोग व विभाग नामक गुणों पर प्रकाश डालें।
5. पृथित्यादि द्रव्यों के रूपादि गुणों नित्यत्व अनित्यत्व का निरूपण करें।

(खण्ड-ख)

(लघु- उत्तरीय प्रश्न)

नोटः खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5 x5 =25)**

6. वेद की बुद्धिपूर्वता पर प्रकाश डालें।
7. सुख, दुःख व ज्ञान के परस्पर भिन्नत्व का प्रतिपादन करें।
8. शुचि व अशुचि द्रव्यों का उल्लेख करें।
9. समवायी, असमवायी व निमित कारणों का उल्लेख करें।
10. युक्तयोगी व युञ्जानयोगी से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।
11. रागोत्पत्ति के विभिन्न कारणों का वर्णन करें।
12. ''दुष्टं हिंसायाम्'' सूत्र की व्याख्या करें।

----------x----------

Roll No.....

Signature of Invigilator .....

Paper Code
BD-C8-402

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali
Examination May-June-2024
B.A. Darshan, Semester: 4th
Darshan: Paper: Second
सांख्यदर्शनम् उत्तरार्द्ध

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क
(दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. सांख्यदर्शन के आख्यायिकाध्याय के अनुसार विवेकज्ञान के साधन के रूप में 05 शास्त्र तथा लोक प्रसिद्ध आख्यायिकाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।
2. महर्षि कपिल के अनुसार मंगलाचरण की उपादेयता को दिये गये हेतुओं के माध्यम से विस्तारपूर्वक समझाइये।
3. महर्षि कपिल के अनुसार ध्वनिरूप वेद के अनित्यत्व का प्रतिपादन करते हुये वेद के अपौरूषेयत्व को सिद्ध कीजिये तथा पौरूषेय के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करके वेद की स्वतः प्रामाण्यता को सिद्ध कीजिये।
4. देहादि से अतिरिक्त आत्मा के अस्तित्व का उपपादन करते हुये महर्षि कपिल के अनुसार मुक्ति की अवधारणा का विशद विवेचन कीजिये।
5. निम्न पर टिप्पणी लिखिये-
   (i) लौकिक व वैदिक कर्मों की अनुष्ठान किसके अधीन है?
   (ii) पुरूष का प्रकृति के साथ संबंध किस निमित्त से होता है?
   (iii) आचार्य पंचशिख तथा सनन्दनाचार्य के अनुसार बंधन का कारण स्पष्ट करते हुये बंधन का कारण कोई भी निमित्त हो उसका विनाश पुरूषार्थ कहलाता है? सिद्ध कीजिये।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. "बहुशास्त्र गुरूपासनेऽपि सारादानं षट्पदवत्" – आख्यायिका की भावार्थसहित सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

7. इंद्र तथा विरोचन की कथा के दृष्टांत से सिद्ध कीजिये कि उपदेश के श्रवण मात्र से पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

8. "न भोगाद्रागशान्तिर्मुनिवत्" आख्यायिका के माध्यम से समझाइये कि भोगों से चित्त में विद्यमान अनादि राग की समाप्ति असंभव है।

9. महर्षि कपिल के अनुसार प्रमाणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिये कि चेतन परमात्मा से अचेतन परिणाम असंभव है।

10. सांख्यदर्शनानुसार प्रकृति व पुरूष के अतिरिक्त सब कुछ अनित्य है। विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

11. "न श्रुतिविरोधो ....." सूत्र को पूर्ण करते हुए उसके भावार्थ को लिखिये तथा जगत् की सत्यता को भी स्पष्ट कीजिये।

12. "आत्मा जब प्रत्येक अवस्था में असंग स्वभाव वाली ही है, तब ध्यान आदि अष्टांगयोग की उपयोगिता के प्रयोजन को महर्षि कपिल के अनुसार समझाइये।

----------X----------

Roll No……
Signature of Invigilator ……

Paper Code
BD-EC5-403

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination May-June-2024

B.A. Darshan, Semester: 4th

Sanskrit: Paper: Third

संस्कृतसाहित्यम् -II

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. यमाचार्य के द्वारा नचिकेता को दिये गये श्रेय तथा प्रेय पथ का संक्षिप्त विवरण देते हुये आत्मतत्व को जानने वालों की महिमा तथा तत्वज्ञानी की दुर्लभता का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।
2. रथ तथा रथी के रूपक को स्पष्ट करते हुये विवेकहीन की विवशता तथा दुर्गति और विवेकशील की स्वाधीनता तथा परमगति का प्रतिपादन कीजिये।
3. यमाचार्य के अनुसार परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुये अग्नि, वायु और सूर्य के दृष्टान्त से परमेश्वर की व्यापकता और निर्लेपता को समझाइये।
4. ज्ञानकर्मसंन्यास योग के अनुसार विभिन्न प्रकार के यज्ञों का वर्णन करते हुये यज्ञशेषरूपी अमृत का पान करने वाला सनातन ब्रह्म को प्राप्त करता है। सिद्ध कीजिये।
5. कर्मसंन्यासयोग के अनुसार निर्वाण प्राप्त महापुरूष की ब्राह्मी स्थिति का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

खण्ड-ख
(लघु-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. कठोपनिषद् में वर्णित आत्मा के वास्तविक स्वरूप का वर्णन कीजिये।

7. यमाचार्य के अनुसार सिद्ध कीजिये कि- परब्रह्म परमात्मा अपने पुरूषार्थ से प्राप्त नहीं होते हैं बल्कि उसी को प्राप्त होते हैं जिन्हें प्रभु स्वीकार कर लेते हैं।

8. सम्पूर्ण प्राणियों की हृदयरूपी गुफा में छिपा हुआ परमात्मा किस बुद्धि के द्वारा जाना जाता है तथा भगवद् प्राप्ति का पथ अत्यंत कठिन तथा दुर्गम क्यों है?

9. ब्रह्ममयी अदितिदेवी कौन हैं? इनकी महिमा को संक्षेप में समझाइये।

10. यमाचार्य के अनुसार मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा की क्या गति होती है? मंत्र के माध्यम से स्पष्ट कीजिये।

11. श्रीभगवान् का जन्म व कर्म दिव्य होता है। अतः उनके अवतार के हेतु को श्रीभगवान् की वाणी के माध्यम से स्पष्ट कीजिये।

12. भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार ज्ञान व श्रद्धा की महिमा को समझाइये।

----------X----------

Roll No……
Signature of Invigilator ……

Paper Code
BD-SEC-405

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Examination May-June-2024

B.A. Darshan, Semester: 4th

आयुर्वेद

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. आयुर्वेद का परिचय, प्रयोजन एवं विशेषताओं का विस्तारपूर्वक निरूपण करें।
2. त्रिदोष सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं? विभागसः वर्णन करें।
3. आयुर्वेद में अग्नियाँ कितनी प्रकार की होती हैं? विस्तार से समझाइये।
4. त्रिदण्ड सिद्धान्त के साधनभूत तत्वों का विस्तारपूर्वक निरूण करें।
5. त्रिदोष, पञ्चमहाभूत एवं पञ्चकोश का सम्बन्ध क्या है? स्पष्ट करें।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. अष्टांग चिकित्सा क्या है? सभी भेदों का संक्षेप में निरूपण करें।
7. आदानकाल एवं विसर्गकाल क्या होता है? एवं इनमें भेद स्पष्ट करें।
8. ऋतुओं के अनुसार पथ्य-अपथ्य आहार का वर्णन करें।
9. दिनचर्या एवं रात्रिचर्या की क्रियाविधि कैसी होनी चाहिए।
10. गुण, वीर्य, विपाक एवं प्रभाव किसे कहते हैं?
11. पञ्चमुख्यप्राण एवं पञ्चउपप्राण इनके कार्य तथा स्थान का वर्णन करें।
12. पञ्चकर्म की विधियों का संक्षेप में व्याख्या करें।

----------X----------

Roll No……

Signature of Invigilator ……

Paper Code
BD-SEC-401

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali
Examination May-June-2024
B.A. Darshan, Semester: 4th
गीता स्मरण-II

Time: 1.5 Hours **Max. Marks: 30**

नोट : यह प्रश्नपत्र तीस (30) अंकों का है जिसमें पांच (05) दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×10=30)**

(दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

1. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार भक्त कितने प्रकार के होते हैं? तथा उनमें कौन श्रेष्ठ हैं?
2. ज्ञान-विज्ञान योग में वर्णित भगवान् के षट एवं अपराप्रकृति का वर्णन करें।
3. भगवान् श्रीकृष्ण के अनुसार निम्न को परिभाषित करें- ब्रह्म, अध्यात्म, कर्म, अधिकृत, अधिदैव एवं अधियज्ञ।
4. अक्षरब्रह्मयोग में वर्णित उत्तरायण एवं दक्षिणायनकाल का वर्णन करें।
5. किस प्रकार के भक्त भगवान् को प्रिय होते हैं? किन्हीं तीन श्लोकों के द्वारा समझाइए।

----------x----------

Roll No.....

Signature of Invigilator .....

Paper Code
BD-EC6-407

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali
Examination May-June-2024
B.A. Darshan, Semester: 4th
संस्कृत व्याकरण-II

Time: 3 Hours **Max. Marks: 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क
(दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. 'कारक' के विषय में निबन्ध प्रस्तुत करें।
2. समास को परिभाषित करते हुये विस्तार से सभी समासों का परिचय प्रदान करें।
3. दधि, मधु और पयस्- इन तीनों शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में लिखें।
4. अस् नश् श्रु इन तीनों धातुओं के पांचों लकारों में रूप लिखें।
5. रचनानुवाद- कौमुदी ग्रन्थ से अभ्यास 17 का परिचय विस्तार से प्रदान करें।

खण्ड-ख
(लघु-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. लभ् और मुद् धातुओं के पांचों लकारों में रूप लिखें।
7. 'यच्' और 'नी' इन दोनों धातुओं के रूप सभी पांचों लकारों में लिखें।
8. गृह और 'वारि' इन दोनों शब्दों के रूप सातों विभक्तियों में लिखें।
9. मति और माता इन दोनों शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में लिखें।
10. संस्कृत में पचास पर्यन्त की संख्या लिखें।
11. सेव धातु के लट् लकार सम्बन्धित शब्दों का एक-एक वाक्य रचना संस्कृत भाषा में करें।
12. हिन्दी से संस्कृत बनाएं-

राम वन जाते है। वहाँ फलमूल ही खाते हैं। छात्र विद्यालय से आ रहा है, वह घर में प्रातःकाल व्यायाम करता है। इन्द्र कर्ण को कवच और कुण्डल मांगते हैं।

----------X----------